LOK SABHA

Wednesday, August 9, 1967/Sravana 18, 1889 (Saka).

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[MR. SPEAKER *in the Chair.*]

OBITUARY REFERENCE

(Death of Shri Jai Bahadur Singh)

Mr. Speaker: I have to inform the House of the sad demise of Shri Jai Bahadur Singh who passed away at New Delhi this morning.

Shri Singh was a sitting Member of this House from Ghosi Constituency of Uttar Pradesh. He was also a Member of the Third Lok Sabha. He was an unassuming Member and used to take active part in the proceedings of the House and champion the cause of agriculturists.

We deeply mourn the loss of this friend and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

Anybody wants to speak?

The Prime Minister and Minister of Atomic Energy (Shrimati Indira Gandhi): We are meeting today with a sense of sorrow and grief at the untimely death of our colleague, Shri Jai Bahadur Singh. As you mentioned, he came from my home State and indeed was educated in Allahabad. He has been a Member of this House since 1962 and before that, he was in the U.P. Legislative Council. But we have known him as a very sincere and dedicated field worker for many years. He was a very conscientious person and worked with energy.

May I request you to convey, on our behalf, our sentiments of grief and sympathy at his premature demise.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : अध्यक्ष महोदय, आप ने तथा सदन की नेत्री ने स्वर्गीय जय बहादुर सिंह जी के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है, मैं अपने को उस के साथ सम्बद्ध करता हूं। मैंने उन्हें उत्तर प्रदेश में भी काम करते हुए देखा था और दिल्ली में आने के बाद भी उन के हृदय में हर दम यही लगन रही कि वह देश की दलित और पीड़ित जनता की सेवा कर सके तथा एक नये समाज की स्थापना कर सके।

कल वह अच्छे भले थे, और किन परिस्थितियों में उन की मृत्यु हुई यह कहना मेरे लिये कठिन है। कभी कभी यह आशंका होती है कि अस्पताल में उन की ठीक तरह से देख भाल नहीं की गई। शायद अस्पताल से उन्हें जल्दी चले जाने के लिये कहा गया। मैं चाहूंगा कि इस मामले में प्रधान मंत्री निर्देश दें कि स्वास्थ्य मंत्रालय पूरी बात का पता लगाये और सारे तथ्यों को सदन के सामने रक्खे। बीमारी के बाद वह कल सदन में आये थे लेकिन ऐसा लगता है कि बीमारी छिपी रही और डाक्टर या तो उस का पता नहीं लगा सके या ठीक तरह से उस का उपचार नहीं कर सके।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

जो भी हो, उनके निधन से हम लोग बहुत दुखी हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उन की आत्मा को सद्गति प्रदान करे ।

Shri S. A. Dange (Bombay Central South): In the death of Comrade Jai Bahadur Singh, not only our Party has lost a great fighting leader but the democratic movement as a whole in the country has suffered a great loss.

Comrade Jai Bahadur Singh was particularly a leader of the peasant movement in Balia district and then flowered up as a peasant leader in the Kisan Sabha and throughout the country. He had a very fighting spirit and had always espoused the cause of agricultural labourers and other sectors of the peasant masses. He was a very revered leader in the Communist Party also.

Only recently, for a month, he was in hospital in Allahabad as a heart-disease patient. He was discharged and last week again he went to Willingdon Hospital. I do not want to blame anybody just now, but he was declared as a patient who was not a heart patient, and he was advised that he could undertake any activity. So, he went to Lucknow two days back in order to defend the cause of the women who were on hunger strike there and came back in a very excited manner, and he was lost to us. We hope, his cause will be taken by the other fighters from the Party and the democratic movement.

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय, जय बहादुर जी को मैं पहले नहीं जानता था लेकिन जब मैं यहां आया तो उस वक्त वह तीसरी लोक सभा के भी सदस्य थे और उन के साथ हम लोगों का परिचय बढ़ता गया । श्री जय बहादुर सिंह ऐसे इलाके से आते थे जो देश के सब से गरीब इलाकों में से हैं, जिस में बिहार का बहुत कुछ इलाका आता है और पूर्वी उत्तर प्रदेश का इलाका आता है, और जय बहादुर जी ने किसान आन्दोलन में बहुत बड़ा रोल अदा किया । दलितों और शोषितों के प्रति उन की हमेशा हमदर्दी रही ।

उन की मौत पर हमें अफसोस है, और मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से समवेदना प्रकट करता हूं और उन के परिवार के प्रति भी सहानुभूति प्रकट करता हूं ।

Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara): I associate myself with the feelings and sentiments expressed by other friends. Shri Jai Bahadur Singh was a Member of the Third Lok Sabha. Although he did not take part as actively as other Members, anybody who watched him would have come to the conclusion that whenever there was any question in the House regarding agriculturists, he was uncompromising in his own stand and he always fought for their cause.

He was also very friendly, although some of us were not in his party; we were colleagues in the House and I know from personal experience that he was in favour of establishing some paliamentary traditions in this country too. This may be a surprise to many, but I had occasions to discuss these matters with him and I can say that we have really lost a comrade and colleague in the House who would have enriched our parliamentary life as well.

On behalf of my party and on behalf of myself, I condole his death and I hope the House, under your leadership, will send our condolences to his family.

Shri P. Ramamurti (Madurai): I had known Comrade Jai Bahadur Singh for a number of years, for the last twenty to twenty-five years. We had been together in the movements of the country.

Comrade Jai Bahadur Singh had the background of coming from the national movement inside the Communist Party, and he had been jailed during the anti-imperialist struggle against British imperialism, When he came into our movement, since he was coming from that most backward area of Ballia, naturally his attention was drawn towards the conditions of those Ballia peasants. When those peasants were being organised. it was not an easy matter, not only because of the oppression by the zamindars and the big landlords but also because of the active assistance that they got from the police; it was not an easy matter to organise the peasants particularly in those areas. But none-the-less, he was one of those young men who organised a big kisan movement there and fought the oppression by the zamindars.

Later, as we know, he became a Member of Parliament in 1957 Just two or three days back, I saw him in the Lobby. Of course he was pulled down, but I never thought that his end would come so soon. It was a poignant thing that this morning we all heard that he was no more with us.

On behalf of my party and on behalf of myself, I would ask you to convey our condolences to the members of his family.

Shri Ranga (Srikakulam): On behalf of myself and my party, we associate ourselves with the observations made by our friends in sorrow over the death of this friend. Shri Jai Bahadur Singh. So few people devote themselves to the cause of the peasants. Therefore, whether they belong to the Communist Party or any other party, I have always welcomed them and have had a soft corner for them and appreciated their services.

Shri Jai Bahadur Singh has certainly rendered great service to the peasants of his district.

I pray for peace for his soul.

श्री चन्द्रिका प्रसाद (बलिया) : अध्यक्ष महोदय, जय बहादुर जी की मृत्यु पर हमें महान दुःख हुआ है। बलिया क्षेत्र में घोसी कांस्टिटुएन्सी से वह सम्बन्धित थे और हम जय बहादुर सिंह जी को बहुत नजदीक से जानते थे। विरोधी पार्टी में रहते हुए भी कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से उनका बड़ा सम्बन्ध रहा है।

उन के क्षेत्र में हमारी जमींनदारी पड़ती है। जो भी हमारी समस्यायें होती थीं उन से मिल कर हम उनको सुलझा लिया करते थे। गरीबों के तो वह बहुत ही सहायक और विशेषकर खेतीहर मजदूरों के, किसानों के और हरिजनों के। जो समस्यायें उठ खड़ी होती थीं उनके बारे में हम लोग सम्मेलन किया करते थे बातें किया करते थे। उनके देहान्त के बाद इस क्षेत्र के गरीबों का बहुत ही नुक्सान हुआ है।

हम अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

श्री शिव नारायण : (बस्ती) : जय बहादुर सिंह हमारे साथी थे। 1958 से ले कर 1962 तक हम काउंसिल में थे। हम पार्लिमैंट में एक साथ चुन कर आए थे। जमींदार का बेटा होते हुए भी उन्होंने किसानों और हरिजनों के लिए बहुत काम किया है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आपको कोई भी ऐसा कम्युनिस्ट मैम्बर नहीं मिलेगा जैसे आदमी वह थे। उन में कोई इल फीलिंग किसी के प्रति नहीं था। मैं उनको अच्छी तरह से जानता था। खास कर पिछले पांच बरस में उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती थी। जब वह इस से लौट कर आए थे तो मैंने उनके कहा था कि तुम सम्भल कर रहो। मुझे पता नहीं चला कि कब उनका देहान्त हो गया। परसों मैं खुद अस्पताल गया था। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि अस्पतालों में बड़ी असावधानी है। परसों मैं वहां खून देने गया था। उन्होंने

[श्री शिव नारायण]

एक स्थान पर दो सुईयां लगाई लेकिन खून नहीं निकला और उसके बाद एक और सुई बाजू में लगाई तो खून लिया । मैं चाहता हूं कि जो वहां पर असावधानी है, आप दूर करें ।

मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आप से प्रार्थना करता हूं उनके बच्चों तक आप मेरी समवेदना का सन्देश जरूर पहुंचा दें ।

श्री यशवन्त सिंह कुशवाह (भिंड) : श्री जय बहादुर जी के निधन से किसानों का एक सच्चा सहायक उठ गया है, ऐसा हमारा दल अनुभव करता है । उनके निधन से सदन को क्षति हुई है, जो उच्चे कार्यकर्त्ता हैं उनको बड़ा धक्का लगा है । हमारा दल उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है और अध्यक्ष महोदय आप से प्रार्थना करता है हूं कि हमारे दल की यह भावना आप उनके परिवार तक पहुंचा देने का कष्ट करें ।

Shri V. Krishnamoorthi (Gudda-lore): On behalf of the DMK, I associate myself with the feeling expressed on the sad demise of Shri Jai Bahadur Singh, a sitting member of the House. I would request you to convey our condolences to the bereaved family.

श्री इसहाक सामभली (अमरोहा) : कामरेड जय बहादुर की मौत से हिन्दुस्तान एक बहुत बड़े निडर, बेबाक और बहादुर रहनुमा से महरूम हो गया है । कामरेड जय बहादुर मजदूरों और किसानों के लिए तो लड़ते ही थे लेकिन उनके साथ ही साथ मजलूमों के लिए उनके दिल में बड़ा दर्द था और उनके लिए वह लड़ा करते थे ।

अभी जब उत्तर प्रदेश में साढ़े तीन हजार औरतों की छंटनी की गई, और उर्दू जबान के साथ नाइंसाफी की गई हालांकि उनको हार्ट ट्रबल थी, डाक्टरों ने मना किया था, कि वह न जायें, लेकिन वह गए और वहां जा कर उर्दू के लिए, अनएम्प्लायड लेडीज के लिए फ़ास्ट किया । उन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ किसी की परवाह न करते हुए मजलूमों की आवाज बुलन्द की । हमें यह सोच कर सदमा होता है कि इतना बहादुर, इतना बड़ा निडर और बेखौफ रहनुमा हमारे दर्म्यान से उठ गया है । मेरे रहनुमा कामरेड डांगे इस बारे में कह चुके हैं । मैं उनके साथ अपने को शामिल करता हूं और खिराजे अकीदत पेश करता हूं ।

[شری اسحاق سمبھلی - کامریڈ جے بہادر کی موت سے ہندوستان ایک بہت بڑے نڈر بیباک اور] بہادر رہنما سے محروم ہو گیا ہے - کامریڈ جے بہادر مزدوروں اور کسانوں کے لئے تو لڑتے ہی تھے لیکن اس کے ساتھ ہی ساتھ مظلوموں کے لئے ان کے دل میں بڑا درد تھا اور ان کے لئے بھی وہ لڑا کرتے تھے -

ابھی جب اتر پردیش میں ساڑھے تین ہزار عورتوں کی چھٹنی کی گئی - اور اردو زبان کے ساتھ ناانصافی کی گئی حالانکہ ان کو ہارٹ ٹربل تھی ڈاکٹروں نے منع کیا تھا کہ وہ نہ جائیں - لیکن وہ گئے اور انہوں نے وہاں جا کر اردو کیلئے - ان امپلائڈ لیڈیز کے لئے فاسٹ کیا - انہوں نے بڑی بہادری کے ساتھ کسی کی پرواہ نہ کرتے ہوئے مظلوموں کی آواز بلند کی - آج ہمیں یہ سوچ کر بڑا صدمہ ہے کہ اتنا بہادر - اتنا بڑا نڈر

اور بے خوف رهنما همارے درمیان سے اٹھ گیا هے - میرے رهنما کامریڈ ڈانگے اس بارے میں کہہ چکے ھیں - میں ان کے ساتھ اپنے کو شامل کرتا هوں اور اظهار عقیدت پیش کرتا هوں -]

श्री महाराज सिंह भारती (मेरठ) : जर बहादुर सिंह जी का श्रौर मेरा साथ उत्तर प्रदेश की विधान परिषद में हुआ था जब वह कम्युनिस्ट पार्टी के अकेले मैम्बर थे उस सदन में । उन दिनों जब उत्तर प्रदेश में विरोधी दलों में आपस में बहुत ज्यादा विरोध हुआ करता था, झगड़े हुआ करते थे, ख्वाह-मुख्वाह की नुक्ताचीनी हुआ करती थी, उन दिनों जय बहादुर जी और हम लोग जो विधान परिषद के अन्दर विरोधी दल की शक्ल में थे, हम में कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ । ऐसे आदमी बहुत कम होते हैं राजनीति में जो बहुत प्रगतिशील विचारों के हों, जिन में क्रान्तिकारिता हो लेकिन बुद्धि में इतना बड़ा सन्तुलन हो कि वे अपने सभी साथियों को, दूसरे विरोधी दलों से मिला जुला कर चल सकें और मालूम पड़े कि विरोधी दल एक शक्तिशाली रूप में और एक जूट हो कर काम कर रहा है । लेकिन जय बहादुर जी में ये सारे गुण थे । उन दिनों वह मेरे साथ वहां थे । मैं यहां आया लेकिन मेरे यहां आने से पहले ही वह यहां आ चुके थे । बीच बीच में हमारी बातें होती रही और उत्तर प्रदेश की महिलाओं के सिलसिले में अंतिम जो मेरी उन से भेंट हुई तब भी उन्होंने यह कहा कि इस मामले में कुछ निपटेगा नहीं क्या ? हमने कहा कि कोशिश करो हम भी आपके साथ हैं, जो कुछ होना है, हो जाएगा । उनके अन्दर जितनी लगन थी, जितनी सभ्यता थी और जितनी मिलन-सारिता थी, इतनी मिलनसारिता बहुत कम लोगों में मिलती है ।

उनके निधन से देश एक बहुत अच्छे वर्कर से वंचित हो गया है ।

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर) : कामरेड जय बहादुर जी का और मेरा तकरीबन बीस साल तक साथ राजनीति जीवन में रहा है ।मैंने परसों भी जब वह यहां तशरीफ लाये थे तो उन से कहा कि तुम आखिर आरम क्यों नहीं करते हो, तुम्हारे बारे में कहा गया है कि तुम्हें अखलात की .शिकायत है और हो सकता है कि किसी हालत में यह गहरा असर कर जाए । उन्होंने हंसते हुए तब यही कहा था कि मरना एक दिन है, चाहे आज मरें या कल मरें । अब जीने की अभिलाषा नहीं है । मुझे मालूम नहीं क्यों उन्होंने येशब्द कहे थे । आज भी जब सुबह साढ़े सात बजेउन्होंने सरजू पाण्डेय जी को टेलीफोन किया तो भी हंसते हुए यही कहा था कि बिल वगैरह तैयार करवा दो, मुझे जाना है । यह किसी ने भी आशा नहीं की थी कि वह इतनी जल्दी चले जायेंगे । वह घर में अकेले थे । पहले सरजू पाण्डेय जी पहुंचे उसके बाद मैं पहुंचा । मुझे अफसोस सिर्फ एक बात का है । मुझे उनके देहान्त का अफसोस न होता अगर विलि-गंडन अस्पताल का कोई हार्ट एक्सपर्ट मेहरबानी करके पहुंच गया होता मौत के पहले । हार्ट पेशेंट तशरीफ लाये उनका हार्ट गायब हो चुका था । इस बात का मुझे अफसोस है । पच्चीस साल के करीब राज-नीतिक जीवन में हमरा साथ रहा । मैं यह नहीं कहता हूं कि इसकी जांच होनी चाहिये । लेकिन अस्पताल के एक हार्ट एक्सपर्ट ने यह बता दिया था कि योअर हार्ट एज इज गुड एज माईन और इस वजह से तुम कहीं भी जा सकते हो । वह ट्रेवल करने लगे, सफर करने लगे, आन्दोलनों में हिस्सा लेने लगे । इसके फलस्वरूप आज जय बहादुर जी चले गये हैं ।

मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । वह एक ऐसे दिन गए हैं जोकि हिन्दुस्तान के लिए एक इनक्लाबी दिन है । यह दिन हिन्दुस्तान की हिस्ट्री में एक याद-

[श्री स० मो० बनर्जी]

गारी दिन है । इस दिन हजारों औरतों और मर्दों ने इनकलाब का झंडा बुलन्द किया था ।

Shri A. N. Mulla (Lucknow): On behalf of the Independent Group, I rise to associate our group with the feelings which have been expressed by the members in this House.

I did not know Shri Jai Bahadur Singh from before, but when last time I went to Lucknow I came to know him as we were associated together in one particular work. Shri Ishaq Sambhali has already referred to it, it was the cause of Urdu that was taken up by him.

I went there, and only the day before he went on hunger strike for 24 hours to show his sympathy for that cause. So, this can certainly be inferred that knowing that almost a death sentence was hanging against him, he was so fearless, and whenever he considered what was his public duty, he did not fail to do it at any cost. I think all must pay homage to this particular quality which he mainfested, and therefore we are here to associate ourselves with what has been said by others.

Shri M. Muhammad Ismail (Manjeri): I also beg to associate myself with the sentiments expressed here in the House regarding the untimely and sad demise of the hon. Member. I do not know much about him, but I learn that he really sacrificed himself for the good of the public, particularly for that of the poor people. I also join in the request that our condolences might be conveyed to the members of the bereaved family.

Mr. Speaker: The House will stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

Mr. Speaker: As a mark of respect to the memory of the deceased, the House stands adjourned to meet again at 11 A.M. tomorrow.

11:21 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, August 10th, 1967/Sravana 19, 1889 (Saka).